Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2024 = 8.153
https://www.srjis.com/issues_data/227
Peer Reviewed & Refereed Journal, Jan-Feb 2024, Vol- 12/81
https://doi.org/10.5281/zenodo.10862902

श्री अरविन्दो का श्रीमद्भगवद्गीता दर्शन एवं शैक्षिक मूल्य

ओमवती एवं डॉ रैनू गुप्ता
शोध–छात्रा संस्कृति विश्व विद्यालय, मथुरा
(शोध निर्देशक)शिक्षा विभाग संस्कृति विश्व विद्यालय, मथुरा

Paper Received On: 20 Jan 2024
Peer Reviewed On: 26 Feb 2024
Released On: 01 March 2024

Abstract

शैक्षिक मूल्यों के संदर्भ में श्रीमद्भगवद्गीता का विषय क्षेत्र इतना व्यापक है कि प्रस्तुत अध्ययन में जल की कुछ बूँदों के रूप में सागर को संचित करने का प्रयास मात्र है। श्रीमद्भवद्गीता की विशालता का आकलन ऐसे किया जा सकता है कि यह एक मूल्यों का भण्डार, जीवन जीने की कला, संस्कार व चरित्र का भण्डार आदि से भी आलोकित किया जाता है। अतएव प्रस्तुत अध्ययन में श्रीमद्भगवद्गीता के विभिन्न अध्यायों पर भिन्न–भिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत शोधकार्य किये जा सकते हैं। श्री अरविंदो का सर्वव्यापी दर्शन, जैसा कि नाम ही इसकी सर्वव्याकता को परिभाषित करता है, भविष्य में श्री अरविंदो की जीवनी, रचनात्मकता और व्यक्तित्व के माध्यम से विभिन्न शोध विषयों पर कार्य किया जा सकता है।

पारिभाषिक शब्दः*शैक्षिक मूल्य, शैक्षिक दर्शन, शिक्षार्थी, आध्यात्म।*

विश्लेषण एवं निष्कर्षः कोई भी व्यक्ति समाज की अच्छाई–बुराई, दुःख–सुख, प्रेम–घृणा, सहयोग संघर्ष से प्रभावित हुए वह नहीं रह पाता। आखिर समाज ही उसकी विविध आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। उसे विकास का अवसर प्रदान करता है, उसे पूर्णता प्राप्त कराने में भी समाज ही सहायक होता है। समाज में जहाँ एक ओर प्रेम, सहयोग, सद्भाव, परस्पर सहयोग, सामंजस्य और निर्भरता आदि का भाव विद्यमान है। वहीं दूसरी ओर सामाजिक संघर्ष, कलह, विद्वेष, कटुता आदि से भी इन्कार नहीं किया जा सकता क्योंकि ये दोनों स्वीकारात्मक एवं निषेधात्मक प्रवृत्तियाँ मानव प्रकृति में विद्यमान हैं। मानव इतिहास के प्रत्येक काल में दोनों ही प्रवृत्तियों का दिग्दर्शन किया जा सकता है, क्योंकि ये दोनों मानव जीवन के आवश्यक अंग हैं। जहाँ एक

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

ओर किसी समाज को जीवित रखने अथवा उसकी उन्नति और विकास के लिए मानव का स्वीकारात्मक दृष्टिकोंण उसमें आपस में सहयोग, त्याग और संयम आदि आवश्यक होता है। तो यह भी सत्य है कि मानव के निषेधात्मक दृष्टकोंण–कटुता, विरोध, संघर्ष, अलगाव आदि के कारण समाज न केवल बुराईयों का शिकार होता है। अपितु उसकी अवनति एवं विनाश प्रतिफल भी देखा जा सकता है। समाज में सुसंगति सामंजस्य एवं सद्भाव बने रहने के लिए जीवन के मूल्यों एवं आदर्शों की आवश्यकता होती है। समाज दर्शन ऐसे मूल्यों एवं आदर्शों की स्थापना करता है। समाज के विभिन्न चिन्तक समय पर ऐसे ही उच्चतर मूल्यों की स्थापना करते आये हैं जिसके कारण सामाजिक संतुलन बना हुआ है।

शैक्षिक मूल्य : मूल्य वह है जो व्यक्ति की इच्छा को संतुष्ट करता है। यह एक चिर स्थायी विचार, एक विशिष्ट प्रकार का आचरण अथवा जीवन का एक उच्चतम बिन्दु कहा जा सकता है।

कैन के शब्दों में – "मूल्य वे आदर्श अवस्थायें और मानक हैं जो किसी समाज या समाज के अधिकतर व्यक्ति अपनाते हैं।"

हाकडिंग के अनुसार– "मूल्य वस्तु या विचार में निहित गुण, जिसमें हमें सन्तुष्टि मिलती है या उस सन्तुष्टि के लिए साधन मिलता है।"

शैक्षिक मूल्यों के पुनर्निर्माण के लिए विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग (1949–50), माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53) तथा शिक्षा आयोग (1964–66) की नियुक्ति की तथा आयोग ने अपने प्रतिवेदन में शैक्षिक मूल्यों की स्थापना के प्रयास प्रारम्भ किये और कहा कि भारतीय शिक्षा व्यवस्था को धर्मदर्शन, उपनिषद् व वेद आधारित करके जीवन की आकांक्षाओं व आवश्यकताओं के अनुरूप बनाया जाय। महाभारत शैक्षिक मूल्यों के बोध हेतु वर्तमान धार्मिक साहित्य में अग्रणी है और विशेष करके श्रीमद्भागवत के रूप में वर्णित ज्ञान, भक्ति व कर्मयोग के रूप में अठारह अध्याय के 700 श्लोक विषय है।

शैक्षिक मूल्यों के अन्तर्गत शिक्षक का आदर्श रूप गुरु की व्युत्पत्ति, गुरु की आवश्यकता, वेदों तथा उपनिषदों में वर्णित गुरु का स्वरूप, पुराणों में गुरु की महिमा, जवाबदेही, प्रतिबद्धता, शिक्षक की व्यवसायिक प्रतिबद्धता, व्यवसायिक मानक तथा प्रभावी कारक, शिक्षक उच्चतर संहिता तथा उसके लक्षण, छात्र (शिष्य) का विश्लेषण– ब्रह्मचर्य, वेद, उपनिषद व पुराणों के

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

आधार पर शिष्य, साधक व शिष्य में समानता व असमानता, शिशिशान्ति अर्थात् (लोक–परलोक के प्रति वैराग्य, ईश्वर ज्ञान में लीन), शक्ति अर्थात् ईश्वर के प्रति अनन्य भाव से निमग्न, पदार्थामातिनी अर्थात् ईश्वर चिन्तन–मनन में निमग्न उपरोक्त सात भूमिकायें हैं। मूल्य एक अमूर्त अवधारणा है जो मानव जीवन को नियंत्रित और निर्देशित करती है, जो एक मानक गुणवत्ता और सामाजिक अवधारणा के रूप में किसी की जरूरतों की संतुष्टि के साथ स्थापित होती है जो लोक कल्याण और आत्म प्राप्ति की प्राप्ति में योगदान करती है।

मूल्यों और शिक्षा के सम्बन्ध को देखने से स्पष्ट होता है कि दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। शिक्षा में मूल्यों की स्थापना को मूल्य शिक्षा कहते हैं। आजकल शैक्षिक मूल्य शब्द का प्रयोग मूल्य शिक्षा के लिए किया जाता है। शिक्षा मूल्य का सार व्यापक है। इस दर्शन के तहत मनुष्य के जीवन के मूल्य निम्नानुसार वर्गीकृत किया गया है–

1. **शारीरिक मूल्य–** विद्यालयीय जीवन में शिक्षा में शरीर को निरोग एवं स्वस्थ रखने सम्बन्धी मूल्यों को इसके अन्तर्गत रखा जा सकता है। व्यायाम, खेलकूद, योग, ब्रह्मचर्य आदि एसे ही मूल्य हैं।
2. **सामाजिक मूल्य–** सामाजिक संगठन, सहयोग, संस्कृति आदि।
3. **राजनीतिक मूल्य–** लोकतन्त्र, न्याय, अनुशासन, प्रजाहित, सुव्यवस्था आदि।
4. **नैतिक मूल्य–** इसके अन्तर्गत संयम, सदाचार पालन, त्याग, सत्यता, दया कर्तव्य आदि को रखा जा सकता है।
5. **आर्थिक मूल्य–** धनार्जन, जीविकोपार्जन, कर्मण्यता, श्रम आदि।
6. **धार्मिक मूल्य–** अहिंसा, दया, समता, आस्था, दान, क्षमा, सत्य, अक्रोध, मोक्ष आदि।
7. **संवैधानिक मूल्य–** स्वतन्त्रता, समानता, भातृत्व, न्याय, समाजवाद, पंथ निरपेक्ष एवं कानून आदि।
8. **वातावरणीय मूल्य–** पर्यावरणीय बोध, पर्यावरण, जागरूकता, प्रकृतिज्ञान, पर्यावरण सन्तुलन, पर्यावरण संरक्षण, जीव–जन्तु आदि।
9. **वैश्विक मूल्य–** विश्वबन्धुता, विश्वमित्रता, समानता, सहअस्तित्व, शान्ति, मानवतावाद, अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव, न्याय आदि।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

10. **वैज्ञानिक मूल्य–** सृजनात्मकता, वस्तुनिष्ठता, तर्क, चिन्तन, कल्पना, अन्वेषण, जिज्ञासा, आविष्कार आदि।

11. **सौन्दर्यात्मक मूल्य–** रचना, अनुकरण की प्रवृत्ति आदि।

12. **दार्शनिक मूल्य–** परमात्मा, आत्मा–विवेक, आत्मज्ञान, मानसिक शान्ति, आनन्दोपलब्धि, जीव, जगत, ब्रह्म, मोक्ष आदि।

13. **संस्थागत मूल्य–** विद्यालय का उचित परिवेश, संगठनात्मक संस्थिति शैक्षणिक कार्यकलापों में वस्तुनिष्ठता, मूल्यांकन की गुणवत्ता, शोध पुस्तकों का प्रकाशन, रचनात्मकता, सत्यता आदि।

इस प्रकार शैक्षिक मूल्यों का अर्थ उन मूल्यों से है जो शिक्षकों, छात्रों, अनुशासन, शिक्षण विधियों आदि के माध्यम से एक प्रभावी शिक्षण वातावरण प्रदान करते हैं। छात्र अनुशासन, छात्र–शिक्षक व्यवहार, शिक्षक–शिक्षण प्रभाव, छात्र–शिक्षक व्यवहार, शिक्षक कर्तव्य आदि के रूप में शैक्षिक मूल्य सभी शैक्षिक मूल्यों– समानता, समुदाय, सार्वभौमिक कल्याण, सार्वभौमिकता के अन्तर्गत आते हैं। शैक्षिक मूल्य शिक्षा की उपयोगिता, उद्देश्य और प्रभावशीलता को दर्शाते हैं। शिक्षक और छात्र शैक्षिक मूल्यों के माध्यम से जुड़े हुए हैं। शैक्षिक मूल्य शिक्षकों और छात्रों को आत्म–जागरूकता और उचित विकास के लिए सीखने की गतिविधियों में संलग्न करने के लिए प्रेरित करते हैं।

आज वर्तमान परिवेश में चतुर्दिक शैक्षिक मूल्यों का ह्रास दिखाई दे रहा है, मानव एकाकी होता जा रहा है और स्वार्थ की आँधी में बह रहा है। सेवाओं को आत्मसम्मान, परोपकारिता, सहयोग आदि के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। रोजगार केन्द्र के रूप में परिभाषित किया गया है। शिक्षा एक सतत् प्रक्रिया है जो समाज में आर्थिक स्थिति, राजनीतिक विचारधारा और सांस्कृतिक मूल्यों, सामाजिक और शैक्षिक मूल्यों, सिद्धांतों और दर्शन को दर्शाती है। सामाजिक व्यवस्था के मूल्य व्यक्ति के लिए सही दिशा और कार्यों को निर्धारित करके वेदों और ग्रंथों के अध्ययन को प्रोत्साहित करते हैं। कठोपनिषद् के अनुसार,

"सा विद्याऽया विमुक्तये।

विद्याऽमृतभरनुते।।"

अर्थात्

शिक्षा वह है जो मोक्ष देती है और शिक्षा अमृत के समान है।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

इसलिए किसी भी कार्य को करते समय उस प्रक्रिया में नकारात्मक दृ ष्टिकोण नहीं रखना चाहिए, बल्कि शान्त और निष्पक्ष रहना चाहिए। कर्मयोग सकारात्मक कार्यों और विचारों के साथ अपने लक्ष्यों की ओर काम करने का अभ्यास है। कर्मयोग व्यक्ति के सामाजिक दायित्वों के प्रति समर्पण को दर्शाता है। श्रीमद्भगवद्गीता मानवीय मूल्यों और नैतिक आदर्शों का अमूल्य स्रोत है। शिक्षा में नैतिक विचारों पर जोर देने के लिए शिक्षकों का शिक्षित होना जरूरी था। यह हमें सत्य के मार्ग पर चलने के महत्व की याद दिलाता है। किसी भी अन्य भारतीय दर्शन की तरह, गीता मानव की आध्यात्मिकता, सम्पूर्ण व्यक्तित्व को बदलकर, मानव की दिव्य प्रकृति, नैतिक व्यवहार की अर्न्तज्ञान और ईश्वर के साथ समानता के लिए प्रेरित किया गया है। इसका प्रचार किसी विशेष सम्प्रदाय के लिए नही है। उनकी शिक्षा सर्वव्यापी है, यह धर्म, जाति, पंथ, देश और समय की सीमाओं से परे है। गीता सभी पूजा पद्धतियों से सहानुभूति रखती है।

श्रीमद्भगवद्गीता के निष्काम कर्मयोग का प्रयोग आज भी अस्वीकार्य है। कर्म को अकर्मण्यता से श्रेष्ठ बताते हुए निःस्वार्थ भाव से कर्म करने की आज्ञा गीता की सर्वव्यापक विशेषता है। आज के भारतीय परिवेश में जहाँ भ्रष्टाचार और बुराइयाँ व्याप्त हैं, निष्काम कर्म योग का उपयोग और भी अधिक बढ़ा है। राजनीति और प्रशासनिक सेवाएं समाज सेवा का साधन हुआ करती थीं लेकिन आज उनकी विश्वसनीयता संदिग्ध है और समाज सेवा का लक्ष्य अधूरा रह गया है। शिक्षा प्रणाली के पाठ्यक्रम को बच्चे को अच्छी तरह से विकसित करने, कठिन जीवन स्थितियों का आसानी से सामना करने और अपने शैक्षिक लक्ष्यों के माध्यम से अपने जीवन के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सक्षम बनाना चाहिए। पाठ्यक्रम को शैक्षिक लक्ष्यों का दर्पण माना जाता है और इसलिए इसके निर्माण में भागवत गीता में निहित तथ्य शामिल होने चाहिए, जैसे कि पाठ्यक्रम विविधता, गतिविधि, जिम्मेदार व्यक्तित्व, व्यावहारिकता, व्यावसायिकता, जीवन शैली, आदि। श्रीमद्भागवतगीता के अनुसार, मार्गदर्शन और शिक्षण छात्र की क्षमताओं, प्रतिभा और क्षमताओं पर आधारित होना चाहिए। हमें पाठ्यक्रम में उच्च स्तर के उत्साह को बनाए रखने के लिए सावधान रहना चाहिए, और बच्चों को वह कौशल सिखाया जाना चाहिए जो उन्हें सफल होने के लिए आवश्यक है। नैतिकता को

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सशक्त करने के लिए अपने बच्चों को अपने कार्य में सम्मिलित करना चाहिए।

न कर्मणमनारम्मान्नैष्क्रष्य पुरुषोऽश्नुते,
न च सन्यासनादेव स द्ध समा धगच्छति।।
3/4।।56; श्रीमद्भगवद्गीता

अर्थात् कर्मो से मुँह मोड़ने से न तो कर्मो के फल से छुटकारा मिल सकता है और न ही त्याग से ही सिद्धि प्राप्त हो सकती है।

श्रीमद्भागवतगीता में, कृष्ण स्वयं गुरु के रूप में हैं। गुरु में श्रीकृष्ण जैसे गुण होने चाहिए। उसे मन, वचन और कर्म से शुद्ध और ज्ञानी होना चाहिए। व्यक्ति को सत्यवादी होना चाहिए, व्यवसाय में सेवा करनी चाहिए और बच्चे के मित्र, पिता या सहायक और मार्गदर्शक के रूप में सहिष्णु, उदार और धैर्यवान होना चाहिए। एक अच्छे शिक्षक की तरह, श्रीकृष्ण को गीता में एक आदर्श चरित्र के रूप में चित्रित किया गया है। मूल्य शिक्षा का प्रभाव व्याख्यान पद्धति पर अधिक प्रभावशाली होता है। जैसा कि कृष्ण–अर्जुन संवादों में परिलक्षित होता है। गीता के अनुसार शिक्षक के तीन कार्य होते हैं– शिक्षण, निर्देशन और शासन। उक्त तीनों कार्यो के लिए शिक्षक में चरित्र सर्वोपरि होना चाहिए। ज्ञान प्राप्त करने के लिए लालायित रहना चाहिए। निष्कर्ष रूप में श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित जीवन के विविध आयामों का विश्लेषण निम्नवत् है–

अभिभावकों के प्रति–

श्रीमद्भगवद्गीता एवं महान विचारक अरविन्द द्वारा वर्णित योगदर्शन के गहन विश्लेषण से सर्वाधिक उपादेयता वर्तमान समय में अभिभावकों के प्रति है क्योंकि इस आधुनिक दौर में पाल्य का पालन–पोषण एक बड़ी समस्या हो गयी है। पाल्य को एक सुयोग्य व सफल नागरिक बनाने हेतु यदि जीवन्त में आत्मसात किया जाय तो एक भावी नागरिक का निर्माण किया जा सकता है।

मानवीय सभ्यता के प्रति–

श्रीमद्भगवतगीता एवं विश्वविख्यात श्री अरविन्द द्वारा प्रदत्त योगदर्शन प्राचीन काल से एक आदर्श व उत्कृष्ठ ग्रन्थ के रूप में स्वीकार किया जाता है। श्री अरविन्द अपने दर्शन में कर्म को प्रधानता दी गई है एवं कर्म को परमात्मा

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

की पूजा के समतुल्य माना गया है। इसी प्रकार श्रीमद्भगवतगीता में भी कर्म की प्रधानता को स्वीकार किया गया है।

शिक्षकों के प्रति–

प्रस्तुत अध्ययन में भावी शिक्षकों को अपने यथेष्ट स्वरूप को प्राप्त करने का वर्णन किया गया है। इस अध्ययन के माध्यम से गुरु महिमा तथा गुरु कर्म को श्रेष्ठ बताया गया है। श्री अरविन्द ने अपनी पुस्तक "On Education" में शिक्षक के कर्तव्य एवं उसके गुणों आदि पर विस्तार से चर्चा की और कहा कि शिक्षक बालक का पथ–प्रदर्शक होता है। बालक को ज्ञान देने का कार्य जिस किसी व्यक्ति या माध्यम के द्वारा किया जाये वही शिक्षक कहलाता है। शिक्षक का कार्य बालक को स्व प्रयासों एवं स्व–अनुभवों से ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रेरित करना है। शिक्षक निर्देशक अथवा स्वामी नहीं अपितु वह केवल सहायक व पथ–प्रदर्शक है उसका कार्य सुझाव देना है न कि ज्ञान को थोपना वह बालक के मस्तिष्क को यथार्थ में प्रशिक्षित नहीं करता है और बताता है कि कैसे ज्ञान उसके साधन को परिपूर्ण बनाता है।

छात्रों के प्रति–

श्रीमद्भागवतगीता में वर्णित गुरु–शिष्य संवाद अर्थात् श्रीकृष्ण तथा अर्जुन के मध्य उपदेशात्मक व्याख्यान का वर्णन किया गया है। अतएव हमें यह चाहिए कि उपरोक्त साहित्य के माध्यम से अर्जुन के चरित्र को वर्तमान के विद्यार्थी आत्मसात करके एक धीर वीर व गम्भीर छात्र जीवन का निर्वहन करें और भविष्य का निर्माण करें क्योंकि यह कहा गया है कि आज का विद्यार्थी किसी भी राष्ट्र का भविष्य निर्माता होता है। इसी क्रम में फ्रांसिस बेकन ने अंग्रेजी साहित्य में "OnStudies" में लिखा है कि "Child is the father of man" अतएव हमें अपने विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण में श्रीमद्भागवतगीता के अर्जुन के चरित्र को आत्मसात करने की जरूरत है। अरविन्द ने शिष्य के सन्दर्भ में लिखा है कि वह शिक्षा व्यवस्था का केन्द्र होता है। अतएव उस पर ज्ञान थोपा न जाय वरन् उसकी रुचि, इच्छा, जिज्ञासा, बुद्धि में वृद्धि करके शिक्षा व्यवस्था दी जाय। श्रीअरविन्द ने "Internal Education", Page No.6 पर लिखा है कि 'माता–पिता अथवा शिक्षक द्वारा इच्छित आकार देने के लिए बालक को गढ़ने का विचार जंगली एवं जानना अंधविश्वास है। माता–पिता

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

के लिए इससे बड़ी भूल नहीं हो सकती है कि पहले से ही व्यवस्था करें कि उनका पुत्र (शिष्य) विशिष्ट गुणों एवं क्षमताओं का विकास करेगा। प्रकृति को स्वयं अपने धर्म त्यागने के लिए बाध्य करना उसे स्थायी क्षति पहुँचाना है, उसके विकास को विकृत करना है और उसकी पूर्णता को कुरुपित करना है।

संदर्भः

श्री अरविन्दो एवं श्री मॉ (1995) : श्री अरविन्द की प्र`रणा, श्री अरविन्द सोसाइटी, पाण्डिचेरी।

श्री अरविन्दो एवं श्री मॉ (1995) : गीता के दिव्य संदेश, श्री अरविन्द सोसाइटी, पाण्डिचेरी।

गाँधी, महात्मा (वर्ष – अज्ञात) : द स्टूडेन्ट्स नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद।

गुप्ता, एस0पी0 (2005) : आधुनिक भारत में शिक्षा की समस्यायें, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

तिलक, गंगाधर (2005) : श्रीमद्भागवतगीता रहस्य, गणेश मुद्रणालय, पुणे।

विनोबा भावे (1963) : तीसरी शक्ति, सर्वोदय संघ प्रकाशन, वाराणसी।

शर्मा चन्द्रधर (2007) : भारतीय दर्शन (आलोचना और अनुशीलन), मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन, दिल्ली

स्वामी विवेकानन्द (वर्ष – अज्ञात) : कर्मयोग, साक्षी प्रकाशन मन्दिर, शाहदरा, दिल्ली।

Cite Your Article as

Omwati & Dr. Rainu Gupta. (2024). SHRI ARBINDO KA SHRIMADBHAGVARGEETA DARSHAN EVUM SHAIKSHNIK MULYA. In Scholarly Research Journal for Interdisciplinary studies (Number 81, pp. 244–251). Zenodo. https://doi.org/10.5281/zenodo.10862902

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies